❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।

अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 41, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 जनवरी, 2018 से रविवार 7 जनवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पूर्वोत्तर भारत – पहले ध्यान दिया होता तो!

...आर्य समाज द्वारा स्थापित स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे जब वहां पर भारत माता की जय का नारा लगाते हैं गायत्री मंत्र का पाठ करते, ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना का पाठ करते हैं और संध्या करते हैं और इसी के साथ जब वह गीत गाया जाता है 'ऋषि ऋण को चुकाना है आर्य राष्ट्र बनाना है' तब ऐसा लगने लगता है कि हमने यहां पर आकर के कुछ तो किया, कुछ तो राष्ट्र का ऋण चुकाया। आज वहां आवश्यकता इस बात की है कि उस क्षेत्र में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का क्रम भी तेजी से आरंभ किया जाए।....

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर कभी हमने ध्यान नहीं दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि आसाम, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश आदि 6 प्रांतों में आज हिन्दू समाज की यह परिस्थिति बन चुकी है कि वह लगभग अल्पसंख्यक हो चुका है। इस कारण बड़े-बड़े चर्च यहाँ आसानी से देखे जा सकते हैं किन्तु छोटे से छोटा मंदिर यदि किसी को देखना है तो निराशा ही हाथ आएगी। थोड़ा सा हिस्सा त्रिपुरा का छोड़ दें तो वहां पर नगर निवासी हिन्दुओं की स्थिति वर्तमान में ऐसी है कि हमारे द्वारा ध्यान न दिए जाने के कारण लम्बे समय से वहां पर ईसाई गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो रहा है और बहुत तेजी से बढ़ता हुआ व्यावसायिकस्वरूप बन गया है, वहां के विद्यालय, वहां के अस्पताल, वहां की सेवा आदि अन्य सभी गतिविधियां चर्च के अंतर्गत चलायी जा रही हैं।

हम लोग अपने-अपने क्षेत्र में कार्य करते रहे, वहां जाकर के कार्य करने के बारे में ज्यादा लंबे समय तक विचार नहीं आ सका यह कार्य आर्य समाज को भी करना चाहिए था, परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का इस क्षेत्र में जाना नहीं हो सका और उसके पश्चात् भी आर्य समाज के कार्यकर्ता लम्बे समय तक उस क्षेत्र से अछूते से रहे। 1965 के आसपास वहां पर कार्यों का लाल बहादुर शास्त्री जी के कहने के पश्चात् 'यदि आप लोग सोते रहे तो पूरा पूर्वोत्तर क्षेत्र किसी रुप में भी भारत का हिस्सा नहीं रह जाएगा।' इसलिए आपको यहां पर शिक्षा की गतिविधि आरंभ करनी चाहिए और यही विचार करके आर्य समाज के कर्णधारों ने स्वर्गीय ओम प्रकाश त्यागी जी ने, शास्त्री जी ने और अन्य महानुभावों ने वहां पर इन कार्यों को आरंभ करने का बीड़ा उठाया और वहां पर कार्य आरंभ किया। आसाम के आसपास के क्षेत्रों में इन कार्यों की शुरुआत की गई और वहां पर छोटी-छोटी बाल वाड़िया बनाई गई ।

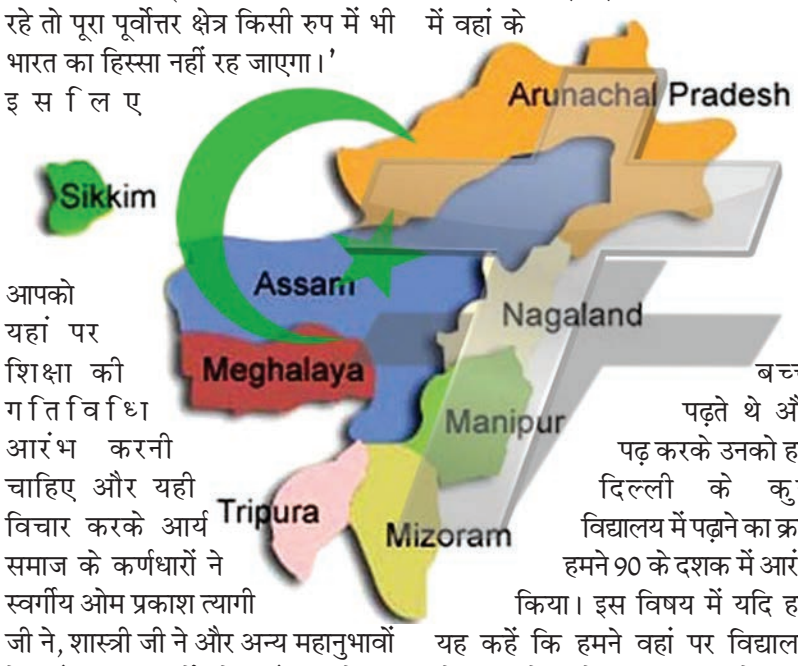

बालवाडियों के पश्चात् वहां पर छात्रावास बनाए गए। छात्रावासों में वहां के बच्चे पढ़ते थे और पढ़ करके उनको हम दिल्ली के कुछ विद्यालय में पढ़ाने का क्रम हमने 90 के दशक में आरंभ किया। इस विषय में यदि हम यह कहें कि हमने वहां पर विद्यालय खोल करके विशेष क्या किया तो उसमें हमें गर्व से यह कहना होगा कि जितने भी विद्यालय उस क्षेत्र में स्थित हैं विशेषकर मैं कहूं तो नागालैंड और मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय के अंदर चलाए जा रहे विद्यालय हैं उन सब में किसी में भी भारत माता की जय के नारे नहीं लगाए जाते हैं, कारण यह है कि उस क्षेत्र में रहने वाले लोग नहीं चाहते थे कि इस क्षेत्र को भारत का हिस्सा, भारत को अपनी माता समझे, भारत को अपना देश समझे लेकिन आज आर्य समाज द्वारा स्थापित वहां के स्कूलों में भारत माता की जय के नारे बच्चे-बच्चे की जुबान से सुन सकते हैं।

वहां उपस्थित कुछ समुदायों का एजेंडा केवल इसी प्रकार का ही है कि वे किसी भी प्रकार से आने वाले समय में उन प्रान्तों को भारत से अलग सा देश बना कर के रख देंगे, हालाँकि भारत का संघीय ढांचा बहुत मजबूत है लेकिन फिर भी सरकार को यह कार्य करना चाहिए, यदि आज वहां कोई सरकार ध्यान न दे तो मैं समझता हूं कि हम अपनी जिम्मेदारी से बचने का कार्य कर रहे हैं, हमारी सामाजिक संस्थाओं का यह दायित्व है विशेषकर उन संस्थाओं का जिन्होंने अपने ऊपर राष्ट्रवाद की समाज के उत्थान की और देश की अखंडता की जिम्मेदारी ले रखी है।

– शेष पृष्ठ 7 पर

न जाने बदले कितने राष्ट्रभक्त बनाए सत्यार्थ प्रकाश ने : आओ हम भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाएं-देशभक्त बनाएं

आमजनों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का अत्याधुनिक मंच

विश्व पुस्तक मेला-2018 प्रगति मैदान, नई दिल्ली

6 से 14 जनवरी, 2018 प्रात: 11से रात्रि 8 बजे	हिन्दी : हॉल नं. 12 स्टाल : 282-291	बाल साहित्य हॉल नं. 7 स्टाल : 161	मेला समापन 14 जनवरी, 2018

50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/- रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में अपना योगदान दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अत: आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें।
इस वर्ष बच्चों के लिए विशेष रूप से स्टाल लिया गया है जहां बच्चों को आर्यसमाज एवं वैदिक संस्कृति से जोड़ने वाला साहित्य प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होगा।

समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175, 9540012175) को नोट कराएं।

पुस्तक मेले में साहित्य मंच से चर्चा : आर्यजन भारी संख्या में पहुंचें

"यज्ञ और पर्यावरण"
6 जनवरी, 2018, दोपहर 12:45-2:15 बजे

हॉल नं. 8

मनुस्मृति द्वारा डॉ. विवेक आर्य जी
7 जनवरी, 2018 सायं 4:15-5:45 बजे

वेद-स्वाध्याय

अनुव्रत और अपव्रत

अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रतानाभूमिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान संदिहः।। - ऋ. 1/51/9
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - अनुव्रताय अपव्रतान् रन्धयन् = नियम-पालकों के लिए नियम-भङ्ग करने वालों का नाश करते हुए और **आभूभिः अनाभुवः श्नथयन्** = असंकुचित मनुष्यों द्वारा संकुचित मनुष्यों का नाश करते हुए **इन्द्र**=परमेश्वर हैं। उस **वृद्धस्य चित् वर्धतः** = वृद्ध के भी बढ़ाने वाले और **द्यां इनक्षतः** = द्युलोक तक व्यापे हुए परमेश्वर की **स्तवानः** = स्तुति करने वाला **वम्र** = स्तोता, स्तोत्र उद्गिरण करने वाला **संदिहः** = अपने सन्देहों को या पार्थिव उपचयों को **विजघान** = नष्ट कर देता है, समाप्त कर देता है।

विनय- परमेश्वर इस संसार को सदा नवजीवन देते हुए जीवित रख रहे हैं। वे संसार के सच्चे व्रतपालक मनुष्यों को स्थन देने के लिए व्रत-भङ्ग करने वालों का विनाश कर रहे हैं और संकुचित लोगों को जल्दी समाप्त करके व्यापक विचारवालों को स्थिरता दे रहे हैं कि इस विश्व में उच्च आदर्शवालों, व्यापक भावनाओं से प्रेरित होकर कर्म करने वालों का ही प्रभुत्व हो। इस विश्व में संसार के सत्य नियमों का अवलम्बन करने वालों के पास ही सच्ची विजयदायिनी शक्ति हैं इस विश्व में काल सब संकुचित दृष्टिवालों को मारता हुआ चल रहा है। उसकी मार से वे ही उतनी देर तक बचते है। जब तक वे ऊंचे और व्यापक दृष्टिवाले होते हैं, परन्तु साधारण लोगों को इस ईश्वरी सत्य नियम में सन्देह रहता है; उन्हें तो प्रायः संसार में नियम-भङ्ग करने वाले और संकुचित लोग ही विजय पाते दीखते हैं। ऐसा सन्देह होना स्वाभाविक है। ये सन्देह तो तब विनष्ट होते हैं जब द्युलोक तक व्यापक इस अद्भुत विशाल इन्द्र के दर्शन पाकर मनुष्य उसका सच्चा स्तोता ''वम्र'' बन जाता है, जब इस दिव्य दर्शन में मस्त हो उसकी वाणी से स्वभावतः स्तोत्र उदगिरण होने लगते हैं, तब उसके सामने कोई विघ्न-बाधा नहीं ठहर सकती। उस समय वह अपने उस द्युलोकवासी **'द्यां इनक्षतः'** तक पहुंचने की अपनी उड़ान में बाधक देखकर अपने सब बड़े-से-बड़े पार्थिव उपचयों को-उन भौतिक बड़े-बड़े संग्रहों को जिनकी हम लोग जी-जान से रक्षा करने में लगे रहते हैं-बन्धन की भांति तोड़ डालता है, उन्हें लात मार जाता है, त्याग जाता हे, क्योंकि वह देखता है कि उसके इन्द्र मात्र इस भूलोक में नहीं हैं, किन्तु द्युलोक तक व्यापे हुए हैं और वह द्युलोक के इस रहस्य को देखता है कि वृद्ध पुरुष की यद्यपि शारीरिक उन्नति पूरी हो चुकी होती है, तो भी उसकी दैवी (आध्यात्मिक) उन्नति के लिए असीम क्षेत्र खुला होता है, उसमें वह जितना चाहे उतना और बढ़ सकता है, अर्थात् वह अध्यात्म की इस महिमा को देख लेता है कि इस विश्व में यद्यपि भौतिक (भूलोक की) उन्नति की एक सीमा है जिससे अधिक उसमें मनुष्य वृद्ध (उन्नत) नहीं हो सकता, तथापि विश्व में एक ऐसा द्युलोक (ज्ञान का लोक) भी है जिसमें कि ऐसी कोई सीमा नहीं, जिसमें मनुष्य अनन्तरूप से बढ़ता जा सकता है। -**वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आ गया 2018 अंध विश्वास निरोधक वर्ष

''बता तू कौन है, वरना तुझे जला कर भस्म कर दूंगा?'' ओझा ने महिला की चोटी पकड़ कर जब उस से पूछा, तो वह दर्द के मारे चीख पड़ी, ''बाबा, मुझे छोड़ दो।'' महिला को दर्द से कराहते देख कर भी बाबा को उस पर जरा भी तरस नहीं आया। वह उसे सोटा मारने लगा तो वह दर्द से चीखती हुई बेहोश होकर वहीं औंधे मुंह गिर पड़ी। सितम्बर, 2015 को गरिमा के 9 महीने के बेटे मयंक का अपहरण उसी की सगी बुआ सावित्री ने किया था जो बेऔलाद थी। वह एक ओझा से अपना इलाज करा रही थी। बच्चे का अपहरण बलि के उद्देश्य से किया गया था। शायद यह दोनों खबर पढ़कर हर किसी को सोचने पर मजबूर कर देगा क्या हम 21वीं सदी के भारत में जी रहे हैं?

अपने मन से पूछिए क्या यह धर्म है? - इस तरह की दुकान इस भारत देश में हर चार कदम पर धर्म के नाम पर चल रही है। किसी शहर में भूत उतारे जा रहे हैं। किसी में काला जादू और ताबीज बन रहे हैं। कहीं संतान के नाम पर, कहीं मन्नत के नाम पर, कोई शनि देव से डरा हुआ है कोई शिरडी जाने के लिए बस ट्रेन में धूल फांक रहा है। कहीं-कहीं तो अंधविश्वास का ऐसा तांडव देखने को मिलता है। कि आम आदमी की रूह कांप जाए। किस प्रकार कदम-कदम पर पंडित और पुरोहित अपना जाल बिछाए बैठे हैं, अज्ञानियों को पकड़ने के लिए। किस प्रकार लोग भगवान को बेच रहे हैं। हजार दो हजार रुपये के अनुष्ठान में कोई बैकुंठ बेच रहा है। कोई पचास सौ रुपये में शनि और मंगल ग्रह को इधर-उधर कर रहा है। कोई चालीस दिन की धूनी रमाये बैठा है तो कोई टीवी पर यंत्र-तन्त्र बेच रहा है।

धर्म नहीं शर्म का विषय है?- क्या संसार कभी पूर्णतया सुखी रहा है? इसी तरह आज भी हर कोई दुखी है। किसी को बच्चे की कमी, तो किसी को कारोबार में घाटा। कोई इश्क में फंसा है, तो कोई घर में ही अनदेखी का शिकार है और इन सबका इलाज मियां कमाल शाह और बंगाली बाबा कर रहे हैं। कहीं मजार पूजी जा रही है, कहीं चादर चढ़ाई जा रही है। धर्म के नाम पर व्यापार फलफूल रहे हैं। लोग इन्हें देखकर गर्व करते हैं कि देखो हमारा देश धर्मात्माओं का देश है दरअसल यह गर्व का नहीं बल्कि शर्म का विषय है और इसमें सुबह उठकर अपनी राशिफल पढ़ने वाले भी उतने ही दोषी हैं जितना एक भूत उतरवाने वाला।

क्या पैसे से परमात्मा खरीदा जा सकता है? - हममें से ज्यादातर लोग ऐसे ही किसी दृश्य को देखते हैं तो बेचैन हो उठते हैं। दूसरों को लुटते देख कर, दूसरों का शोषण होते हुए देख कर व्यथित होते हैं। सवाल उठता है क्या लोग सत्य और अंधविश्वास के बीच के भेद को जानते हैं? हमारे पास कसौटी क्या है? इसलिए सीधा सा रास्ता है कि सत्य को स्वीकार करो और अपने दीये स्वयं बनो। अंधविश्वास का मतलब है, जो हम नहीं जानते उसको मान लेना। अंधविश्वास का यह मतलब नहीं होता कि जो हमसे विपरीत है, वह अंधविश्वासी है। लेकिन इसके विपरीत कहीं ना कहीं हम अपने आसपास देखते हैं कि हर भटका हुआ व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को रास्ता दिखा रहा है। कह रहा है नहीं उस मजार से फला काम हुआ था, उस बाबा से या इस ढोंग से फला की मन्नत पूरी हुई। मसलन मेरा पड़ोसी जो करता है मैं भी वही करूंगा ताकि में अपनी सोसाइटी में उससे कम धार्मिक न रह जाऊ? पड़ोसी सौ रुपये चढ़ा रहा है मैं दो सौ चढ़ा दूंगा तो उससे ज्यादा धार्मिक हो जाऊंगा। इस भीड़ में किसको परमात्मा के दर्शन हुए हैं? बस जाग जाओ इसके बाद परमात्मा का अकूत खजाना है उसका साम्राज्य है।

क्यों श्रद्धा अंधश्रद्धा हो गयी? - कहने का अर्थ यह है कि ईश्वर की खोज न तो विश्वास से होती है, न अंधविश्वास से। उसके लिए तो संदेह की स्वतंत्र चित्त-दशा चाहिए। उसके लिए अन्तकरण में मनन और चिंतन चाहिए। संदेह ने अनुसंधान और विज्ञान के द्वार खोले हैं। यही कारण है विज्ञान में पंथ और सम्प्रदाय नहीं बने। जो व्यक्ति विश्वास कर लेता है, वह कभी खोजता नहीं। खोज तो संदेह से होती है, अंधश्रद्धा से नहीं, इसलिए अन्धविश्वासों पर सन्देह करो, तर्क की कसौटी पर कसो जो निचोड़ आये उसे स्वीकार करो।

...इस भ्रमजाल को, तन्त्र विद्या को, भूत-प्रेत, मंगल-अमंगल, शनि और राहू-केतु समेत तमाम पाखण्ड पर चोट करने के लिए 2018 में आर्य समाज ने कमर कस ली है। वर्ष 2018 आर्य समाज सिर्फ अन्धविश्वास निरोधक वर्ष के रूप में अपना कार्य तेज करेगा। हम गली से मोहल्लों तक, रेलवे स्टेशन से लेकर मेट्रो स्टेशन तक लोगों के बीच जायेंगे। अन्धविश्वास और पाखंड पर लोगों को जागृत करेंगे। हर एक वह अन्धविश्वास जिसमें चाहे किसी को मांगलिक बताकर डराया जा रहा हो या किसी से वास्तुदोष के नाम से पैसा उगाहाया जा रहा हो। ....

किसी दफ्तर में रिश्वत लेना-देना यदि भ्रष्टाचार है तो मन्नत के लिए मन्दिरों में चढ़ावा आस्था कैसे? - फर्ज कीजिये आप किसी दफ्तर में किसी काम से जाते हैं वहां आपको रिश्वत देकर कोई काम कराना पड़े तो क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है? यदि है तो अपनी आत्मा से जवाब दीजिये। मंदिर हो या बाबा, वहां पैसे देकर अपनी मन्नत मांग रहे हैं तो यह आस्था कैसे? दरअसल यह एक भीड़ है! भिखारियों की, चालबाजों की, बेईमानों की, पाखंडियों की, धोखेबाजों की, यह भीड़ है,जो लोगों को सदियों-सदियों से चूस रही है। इस भीड़ में किसके भीतर का दीया जला है? नहीं जला। शायद इन सबसे व्यथित होकर आर्य समाज का जन्म हुआ। इस भ्रमजाल को, तन्त्र विद्या को, भूत-प्रेत, मंगल-अमंगल, शनि और राहू-केतु समेत तमाम पाखण्ड पर चोट करने के लिए 2018 में आर्य समाज ने कमर कस ली है। वर्ष 2018 आर्य समाज सिर्फ अन्धविश्वास निरोधक वर्ष के रूप में अपना कार्य तेज करेगा। हम गली से मोहल्लों तक, रेलवे स्टेशन से लेकर मेट्रो स्टेशन तक लोगों के बीच जायेंगे। अन्धविश्वास और पाखंड पर लोगों को जागृत करेंगे। हर एक वह अन्धविश्वास जिसमें चाहे किसी को मांगलिक बताकर डराया जा रहा हो या किसी से वास्तुदोष के नाम से पैसा उगाहाया जा रहा हो। देश और धर्म को अन्धविश्वास के इस कुचक्र से बचाने के लिए आप सभी का सहयोग जरूरी है। आर्य समाज एक नाम नहीं बल्कि हम सबकी एकजुट और ताकत का नाम ही आर्य समाज है जिससे हमेशा अन्धविश्वास भागता आया है।

- ***सम्पादक***

योगिराज श्रीकृष्ण बनाम मनचले बाबा

...आसाराम और रामपाल के बाद इसी वर्ष अगस्त माह में खुद को इच्छाधारी बाबा बताने वाले स्वामी भीमानंद को प्रवचन की आड़ में सैक्स रैकेट चलाने और 30 लाख की एक ठगी के मामले में गिरफ्तार किया था तो लोगों की यही प्रतिक्रिया सामने आयी थी कि बाबाओं का क्या यही रूप होता है? इसके बाद स्वामी ओम को भी अगस्त में ही पुलिस ने गिरफ्तार किया तो राधे मां भी इसी वर्ष काफी विवादो में रहीं। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम से विवादित तो शायद ही कोई और बाबा रहा हो, जिसके कारण कई लोगों को जान गवानी पड़ी और सरकारी सम्पत्ति समेत सार्वजनिक जन-धन हानि भी हुई...

क्या ऋषि मुनियों की पावन भारत भूमि अब तथाकथित बाबाओं के अय्याशी के अड्डे बनकर रह जाएगी? सवाल सिर्फ मेरा नहीं बल्कि करोड़ों लोगों का है, आखिर क्यों ऋषि-मुनियों की भूमि पर संत के वेश में अय्याश घूम रहे है? ऋषि कणाद से लेकर स्वामी दयानन्द तक जब जमीन पर चले तो धर्म चला पर आज जब बाबाओं के टोले चलते हैं तो धर्म नहीं चलता, कुछ और चलता है। मसलन जब-जब ऋषि मुनि चले तो धर्म चला, अब बाबा चलते हैं तो धर्म नहीं अधर्म चलता है, यकीन न हो तो पिछले कुछ सालों से हर महीने हर वर्ष अखबारों से लेकर मीडिया की सुर्खियाँ में किसी न किसी विवादित बाबा की खबर उठाकर देख लें। इस बार राम-रहीम के बाद लोगों को विश्वास हो रहा था कि शायद अब कोई कथित बाबा ऐसा न करें लेकिन गुजरता दिसम्बर का अंत एक और ढोंगी बाबा की पोल खोल गया। खबर है देश की राजधानी स्थित रोहिणी के विजय विहार इलाके में आध्यात्मिक विश्व विद्यालय पर पुलिस और महिला आयोग की टीम द्वारा छापा मार कर करीब 40 लड़कियों को मुक्त कराया गया है जिनमें नाबालिग लड़कियां भी शामिल हैं। आश्रम की आड़ में अय्याशी का अड्डा चलाने वाला बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित अभी भी पुलिस की पहुंच से बाहर है।

बेशक तमाशबीन लोगों के लिए भले ही यह कोई चटपटी खबर रही हो लेकिन धर्म के नाम चलने वाला यह अय्याशी का धंधा हमें धर्म की हानि के रूप में दिखाई दे रहा है क्योंकि यह सब हो तो धर्म के नाम पर ही रहा था? कहा जा रहा है कि आध्यात्मिक विश्वविद्यालय के नाम से आश्रम चलाने वाला बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित खुद को कृष्ण बताता था। हद तो यह है कि वह हमेशा महिला शिष्याओं के बीच ही रहा करता था। इसका कारण यह है कि उसने 16000 महिलाओं के साथ सम्बंध बनाने का लक्ष्य रखा था। वह लड़कियों को गोपियां बनाकर उन्हें सम्बंध बनाने के लिए आकर्षित करता था। शर्म और ग्लानी का विषय यह भी है कि आखिर किस तरह योगिराज श्रीकृष्ण जी महाराज के नाम पर अपनी दैहिक लालसा पूरी कर रहा था।

सवाल यह भी है कृष्ण का चरित्र उन लोगों को कैसे समझाएं जिन्होंने झूठ के पुलिन्दे पुराणों के अश्लील वर्णन, मीरा की दु:खद गाथा और सूरदास की चौपाई से कृष्ण को जाना है? क्योंकि सूरदास का कृष्ण मक्खन चोर है और पुराणों का कृष्ण गोपियाँ रखता था, कपड़े चुराता था, बस यही झूठ सुनकर लोग बड़े होते हैं और इसे ही सत्य समझ लेते हैं जबकि महाभारत के असली कृष्ण युद्ध कला, नीति, दर्शन, योग और धर्म के ज्ञाता थे।

आसाराम और रामपाल के बाद इसी वर्ष अगस्त माह में खुद को इच्छाधारी बाबा बताने वाले स्वामी भीमानंद को प्रवचन की आड़ में सैक्स रैकेट चलाने और 30 लाख की एक ठगी के मामले में गिरफ्तार किया था तो लोगों की यही प्रतिक्रिया सामने आयी थी कि बाबाओं का क्या यही रूप होता है? इसके बाद स्वामी ओम को भी अगस्त में ही पुलिस ने गिरफ्तार किया तो राधे मां भी इसी वर्ष काफी विवादों में रहीं। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम से विवादित तो शायद ही कोई और बाबा रहा हो जिसके कारण कई लोगों को जान गवानी पड़ी और सरकारी सम्पत्ति समेत सार्वजनिक जन-धन की हानि भी हुई लेकिन इसके बाद भी तब से अब तक न बाबाओं की संख्या कम हुई न भक्तों की?

भक्तों की संख्या क्यों कम होगी आम हो या खास मनुष्य को तो चमत्कार चाहिए। नौकरी चाहिए, व्यापार चाहिए, किसी को संतान चाहिए तो किसी को बीमारी से छुटकारा, जो हाथ से गया उसके लिए बाबा और जो पास में हैं वह बचा रहे उसके लिए भी बाबाओं से मन्त्र चाहिए, इस कारण सुलफे की चिलम फूंकने वाले बाबाओं से लेकर ए.सी. रूम में बड़ी-बड़ी गद्दियों पर बैठने वाले बाबाओं की चांदी कट रही है। बस बाबाओं की शरण में जाओ फिर कोई दिक्कत नहीं आएगी। इस दुनिया का निर्माण करने वाले पूरे ब्रह्माण्ड को रचने वाला ईश्वर तो इनके आगे कुछ भी नहीं। शायद यही सोच बना दी गयी है? अंध श्रद्धा की पराकाष्ठा देखिये! अपनी नौजवान बेटियों को इनके हवाले करने तक में लोग नहीं हिचकते, दस रुपये के स्टाम्प पेपर पर लिखकर मासूम बच्चियों को आश्रमों को दान कर रहे है। इसके बाद वे जो जी चाहे वह करें। दरअसल ये कथित बाबा जो भी कर रहे हैं। लोग होने दे रहे हैं। धर्म के नाम पर अंधश्रद्धा की जो ड्रग्स ये लोगों को दे रहे, वे बेहिचक ले रहे है। बदनाम धर्म और संस्कृति होती है पर होने दे इसकी चिंता न बाबाओं को हैं न भक्तों को!

कहते हैं रक्षा किया हुआ धर्म ही धर्म की रक्षा करता है जो धर्म की रक्षा करता है नि:संदेह धर्म उसकी रक्षा करता है। पर आज लोग धर्म छोड़कर बाबाओं की रक्षा कर रहे हैं। बाबा भक्तों की फौज खड़ी कर रहें हैं राजनितिक लोगों से भक्तों का सौदा वोटों में कर रहे हैं। बस इन बाबाओं को हमेशा एक बेचैनी रहती है कहीं फिर कोई आदि गुरु शंकराचार्य न पैदा हो जाये! कोई स्वामी दयानन्द फिर खड़ा न हो जाये नहीं, तो इनका जमाया हुआ अखाड़ा फिर उखड़ जायेगा इसलिए ये तथाकथित बाबा स्वयं भगवान बन रहे हैं। आस्था को मोहरा बनाकर अपनी तस्वीर की पूजा करा रहे हैं। आश्चर्य इस बात का भी है कि सिर्फ अनपढ़ ही नहीं बल्कि पढ़ें लिखे लोग भी आसानी से इनके इस टॉप ब्रांडेड अन्धविश्वास को स्वीकार कर रहे हैं। कोई बुरे समय में किसी पड़ोसी का भला करे या न करे, पर इन मुफ्तखोरों तथा कथित संतों, बाबाओं, साधुओं, ज्योतिषियों की जीविका का साधन अवश्य बन जाते हैं। जब तक लोग अपनी बुद्धि से तर्क से सत्य स्वीकार नहीं करेंगे तब तक धर्म की आड़ में तांत्रिकों, पाखंडी बाबाओं का पनपना जारी रहेगा। आज बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित पकड़े गये ये अंतिम नहीं हैं क्योंकि अन्धविश्वास अभी भी जिन्दा है। शायद कल तक किसी की इज्जत और किसी का धन चूसने वाला कोई दूसरा बाबा खड़ा कर दे? **-राजीव चौधरी**

बोध कथा

जीवन कटे बिन साथी ना

एक था युवक रामदास। ब्राह्मण का बेटा था, जाति का गुसाई। एक गांव में अपने पिता के साथ रहता था। पिता मन्दिर में पूजा करते थे। लोगों के घरों में मन्त्र आदि पढ़ते थे। बेटा रामदास उन्हें देखता, उनसे प्यार भी करता, परन्तु उस विद्या को प्राप्त न कर सका। तब एक दिन आया, जब रामदास के पिता का देहान्त हो गया। माता पहले ही नहीं थी। दूसरा कोई सम्बन्धी भी नहीं था। पिता भी चले गये तो रामदास के लिए यह संसार सूना हो गया। कभी उसने पिता से भगवान् का नाम सुना था। दु:खी अवस्था में उसने भी सोचा-उस भगवान् को मिलूंगा, जो सबका अपना है। परन्तु भगवान् को मिले कैसे? पाये कहां पर? यह तो उसे पता नहीं था। एक महात्मा के पास पहुंचा। उसने प्रार्थना की-''मुझे भगवान् का दर्शन करा दो, उससे मिला दो!''

महात्मा बोले-''यह बहुत कठिन कार्य है, सरलता से होगा नहीं, इसके लिए बहुत परिश्रम करना होगा।''

रामदास ने कहा-''मैं करूंगा परिश्रम।'' महात्मा बोले-''बहुत अच्छी बात है। वह है कुटिया, उसमें बैठकर भगवान् का नाम लिया कर। भोजन तुझे मिल जायेगा। खाने और सोने से अवकाश मिलते ही जप किया कर!''

रामदास ने ऐसा करना प्रारम्भ किया। परन्तु प्रभु के लिए जो प्यार होना चाहिये, वह तो उसके पास था नहीं। कुछ दिन वहां रहा, जप भी करता रहा। परन्तु जब कुछ हुआ नहीं, तो उसने सोचा-'यह महात्मा तो मुझे ऐसे ही धोखा दे रहे हैं। यह वस्तुत: कोई विधि नहीं। शायद भगवान् भी कुछ नहीं।' इस प्रकार सोचकर एक दिन वह चुपके से उठा, कुटिया को छोड़कर अपने गांव में आ गया। निराश होकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। गांववाले कृपा करके खाना दे देते तो खा लेता, नहीं तो उस वृक्ष के नीचे ही बैठा रहता। तभी उस गांव में एक ज़मींदार ने अपनी इच्छा पूरी होने पर एक बकरी दान देने का निश्चय किया। परन्तु दान किसको दे? यह उसे सूझ नहीं पाया। किसी ने सुझाव दिया-''अपना वह रामदास जो है, किसी महात्मा से शिक्षा लेकर भी आया है। उसी को यह बकरी दे दो।''

इस प्रकार रामदास को बकरी मिल गई। वह घास काटकर बकरी को खिलाता, नहलाता, उसका दूध पीता, उसे हर समय अपने साथ रखता। रात को उसके पास ही सो जाता। उसके जीवन में एक साथी की कमी थी, यह साथी उसे मिल गया। उसने बकरी का नाम ही 'साथी' रख दिया। प्यार से वह उसको कहता-''आओ साथी! यह घास खाओ। आओ साथी! यह पानी पियो। आओ साथी! यहां छाया में बैठो, वहां धूप है।'' बकरी को पता लग गया कि उसका नाम साथी है। *- शेष अगले अंक में*

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वर्ष 2018 में आयोजित होने वाले उत्सव एवं कार्यक्रम

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित उत्सव/कार्यक्रम एवं आयोजन

1. ऋषि बोध दिवस	13 फरवरी, 18
2. आर्यसमाज स्थापना दिवस	18 मार्च, 18
3. ऋषि निर्वाण दिवस	7 नवम्बर, 18
4. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	25 दिसम्बर, 18

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित उत्सव/कार्यक्रम एवं आयोजन

1.	विश्व पुस्तक मेला	6/1 से 14/1/18
2.	सभा अधिकारियों पारिवारिक मिलन	26/1/18
3.	शीतकालीन स्वाध्याय शिविर	23/1 से 31/1/18
4.	आर्यसमाज जहांगीरपुरी के भवन का उद्घाटन	4/2/18
5.	19वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन	4/2/18
6.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (मु. समारोह)	10/2/18
7.	पं. लेखराम बलिदान दिवस	18/2/18
8.	होली मंगल मिलन समारोह	1/3/18
9.	अधिकतम संख्या दिवस	1/4/18
10.	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मोत्सव	26/4/18
11.	यज्ञ सुविधा केन्द्र का उद्घाटन	अप्रैल, 2018
12.	20वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन	6/5/18
13.	ग्रीष्मकालीन स्वाध्याय शिविर	मई,18
14.	विश्व पर्यावरण दिवस पर यज्ञ	5 जून,18
15.	अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम	21 जून,18
16.	आर्य समाज के सेवकों की कार्यशाला	जून,18
17.	सभा का साधारण अधिवेशन	जून/जुलाई,18
18.	20वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन	जुलाई/अगस्त,18
19.	हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति दिवस	26/8/18
20.	गुरुवर विरजानन्द दण्डी स्मृति दिवस	14/9/18
21.	पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर	प्रत्येक मास दो

अन्य कार्यक्रम जिनकी तिथि निश्चित नहीं हो सकी है

22. माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् की स्थापना
23. औचन्दी में गौ-दुग्ध-घृत केन्द्र (गौशाला) की स्थापना
24. कम से कम 10 राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में प्रचार
26. पूर्णकालिक वृहद कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन
27. आर्यसमाज मीडिया सैन्टर की स्थापना/उद्घाटन

आर्य वीर /वीरांगना दल के प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर	मई /जून,18
सार्व. आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर	मई /जून,18
प्रान्तीय आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर, दिल्ली	मई / जून,18
आर्य वीरांगना दल प्रशिक्षण शिविर	मई / जून,18

नोट : 1. अज्ञात परिस्थितियोंवश कार्यक्रमों की तिथि में परिवर्तन सम्भव है।

2. समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि वे उपरोक्त सभी आयोजनों की तिथियों को अपनी डायरी में नोट कर लें। कृपया अपने आर्यसमाज के कार्यक्रमों को निश्चित करते समय उपरोक्त कार्यक्रमों की तिथियों को दृष्टिगत रखें। सभी कार्यक्रमों अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं एवं तन-मन-धन से सहर्ष सहयोग प्रदान करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2074-75 तद्नुसार सन् 2018

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	माघ कृष्ण, 12 वि. 2074	13/01/2018	शनिवार
2.		मकर-संक्रान्ति	माघ कृष्ण, 13 वि. 2074	14/01/2018	रविवार
3.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2074	22/01/2018	सोमवार
4.		गणतन्त्र दिवस	माघ शुक्ल, 9 वि. 2074	26/01/2018	शुक्रवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2074	8/02/2018	गुरुवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2074	10/02/2018	शनिवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2074	13/02/2018	मंगलवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया)	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2074	18/02/2018	रविवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2074	01/03/2018	गुरुवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2075	18/03/2018	रविवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2075	25/03/2018	रविवार
12.		वैशाखी	बैशाख कृष्ण, 2 वि. 2075	13/04/2018	शुक्रवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख शुक्ल 11 वि.2075	26/04/2018	गुरुवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2075	13/08/2018	सोमवार
15		स्वतन्त्रता दिवस	भद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2075	15/08/2018	बुधवार
16.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2075	26/08/2018	रविवार
		हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2075	26/08/2018	रविवार
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2075	3/09/2018	सोमवार
18.		गांधी जयन्ती	अश्विन कृष्ण, 8 वि. 2075	02/10/2018	मंगलवार
19.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2075	19/10/2018	शुक्रवार
20.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2075	21/10/2018	रविवार
21.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2075	07/11/2018	बुधवार
22.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण, 1, वि. 2075	23/12/2018	रविवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

– विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

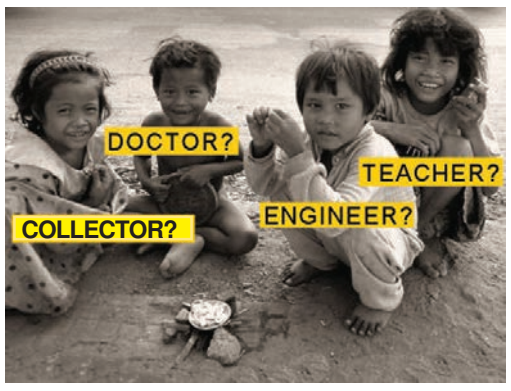

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

अवश्य देखें आर्यसमाज की वैबसाइट

अपने विवाह योग्य बच्चों का आर्यसमाज मैट्रीमोनी पर पंजीकरण कराएं : आर्य परिवार का रिश्ता पाएं

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

पंजीकरण शुल्क : 800/- रुपये दिनांक : 4 फरवरी, 2018

स्थान : आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

पंजीकरण फार्म सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है।

अंधविश्वास-पाखण्ड निरोधक वर्ष 2018 पर विशेष

पाखण्ड, खण्डन, मण्डन, मन्थन

धर्म कर्म का ज्ञान नहीं, भगवान के ठेकेदार बणे।
मानवता के दुश्मन देखों, देश में कई हजार बणे।।
सत्संग वर्षा नाम पर, करते लूट तमाम सुनो।
ओशो रजनीश हरामपाल, और निराशाराम सुनो।
बुरी बिमारी ब्रह्मकुमारी, सारे उल्टे काम सुनो।
चन्द्रा स्वामी-हंसादेशी, धन-धन सतगुरु नाम सुनो।

1. राम रहीम लुच्चा सौदा, कहीं झूठे दरबार बणे।।
महेश योगी, बाल योगी, राधा स्वामी फिरते हैं।
माला तिलक धारके कितने, सीता रामी फिरते हैं।
108 अनन्त शरीर बणे, नमक हरामी फिरते हैं।
धन जोरू के चक्कर में, लोभी कामी फिरते हैं।

2. सन्त महात्मा-खुद अन्तर्यामी, बाबा म बेकार बणे।।
सेक्यूलर भारत में देखो, कितने विदेशी एजेन्ट हुए।
इस्कोन और शिरड़ी वाले, पक्के परमानेन्ट हुए।
अपने देश में रहने वाले, गैरों के पेटेन्ट हुए।
एक नहीं दो चार नहीं ये, लगभग 100 परसेन्ट हुए।

3. भारत की माटी में पलके, भारत के गद्दार बणे।।
कहीं बैरागी और गोसाई, ओघड़-नंगे नाथ फिरें।
कहीं कनफाड़े बोद्ध जैनी, छुप-छुप करते बात फिरें।
जयगुरुदेव दादू पंथी, बहुत सी जमात फिरे।
देश एक और पंथ हजारों, पाखण्डी दिन रात फिरें।

4. कहीं वैष्णों शिव शंकर के, कितने ही अवतार बणे।।
कहीं हाथी पे घूम रहे, माथे पे नम्बर ग्यारहा।
घीसा और कबीर पंथी, गावे के एकतारा।
मत पंथों से फूट पड़ी, देश का होग्या बंटवारा।

5. एक दूजे के दुश्मन होंगे, आधुनिक हथियार बणे।।
मुस्लिम गैर को सहन करें ना, इनमें सत्तर बणें धड़े।
मुद्दा बणा जेहाद का, मर मिटे को तैयार खड़े।
आज ईसाई खून के प्यासे, दुनियां भर में जंग छिड़े।
सिख भी कितने घूम रहे, कंघा कच्छा पहन खड़े।

6. संत नाम के धब्बा लावें, कितने तुच्छ विचार बणे।।
गुरु घंटाल फिरें भतेरे, देश धर्म का ख्याल नहीं।
नाम दान चला ढ़कोसला, ऐसा इन्द्रजाल नहीं।
खुद की बुद्धि काम न आवे, आता जरा मलाल नहीं।
समाज का बंटाधार हुआ, करता कोई सवाल नहीं।

7. बुद्धिजीवी तो शर्मागे, मूर्ख सही होशियार बणे।
धरती पे बोझ फिरें, बने चरित्रहीन ब्रह्मचारी।
संन्यासी मेष धारके, बनते हैं व्याभिचारी।
सन्त नाम की ओढ़ चदरिया, आये हैं बलात्कारी।
इन बहरूपियों ने देखो, बहकाई दुनियां सारी।

8. तन-मन-धन अर्पण कर दो, बैकुण्ड के दातार बणे।
वोट-नोट-कुर्सी के भूखे, नेता लीडर बणे तमाम।
अपार धन करें चढ़ावा, चरण स्पश्र करें सलाम।
गुरुडम फन्दे में फंसके, परिवार सहित बणे गुलाम।
गुरु जी कृपा करें हमारे, सिद्ध हो ज्यांगे सारे काम।

9. कुछ भी करना पड़े जरूरी, हमारी ही सरकार बणे।।
अन्धविश्वास पाखण्ड छोड़ो, मत आओ बहकावे में।
पढ़ो वेद-रामायण-गीता, फंसो मत छलावे में।
धर्म-कर्म-ईश को जानो, रहते क्यों भुलावे में।
वेदों की ओर लौटो, रहो नहीं पछतावे में।

10. पढ़ सत्यार्थप्रकाश, 'रोहतास''आर्य चित्रकार बणे।।

-पं. रोहतास आर्य, चित्रकार मो. 09891361321

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा दिनांक 17 दिसम्बर 2017 में सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये-

★ वर्ष 2018 अन्धविश्वास निरोधक वर्ष के रूप में मनाया जाए।

★ दिल्ली के सभी पुरोहितों को दैनिक यज्ञ पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जाए।

★ माता अमृत बाई कन्या संस्कृत गुरुकुल सागरपुर में चलाया जाए।

★ विश्व पुस्तक मेला 2018 में सत्यार्थ प्रकाश प्रचारार्थ मात्र 10/- में उपलब्ध कराया जाएगा।

★ प्रत्येक वर्ष एक आर्य समाज का निर्माण किया जाए।

★ औचन्दी में गौशाला बनाई जाए जिससे यज्ञ हेतु शुद्ध देशी गाय का घृत उपलब्ध हो सके।

★ आर्य समाज के मीडिया सेन्टर को संचालित करने के लिए एक समिति का गठन किया जाए।

★ आर्य समाजों के कार्यकर्त्ता एवं विद्वानों के परिवार हेतु मेडीक्लेम या आपातकालीन निधि बनाया जाएगा।

- विनय आर्य, महामन्त्री

Veda Prarthana - 25

Hardworking and Not Lazy Persons Find Fulfillment in Life

- Acharya Gyaneshwarya

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय सपृहयन्ति।
यन्ति प्रमादम् अतन्द्राः।।

Ichachhanti devah sunvantam na svapnaya sprahayanti. Yanti pramadam atandrah.
(Rig Veda 8:2:18)

Devah Virtuous/generous persons, persons with divine qualities, ichchhanti respect, like, love sunvantam hardworking honest persons, and na sprahayanti do not love/like/respect svapnaya persons who are lazy or shirk work, or are day dreamers. Atandrah yanti hardworking, non-lazy, disciplined virtuous persons, accomplish/ achieve pramadam' happiness and joy in life.

Those persons who are always attentive, hardworking, complete their tasks and fulfill their responsibilities by doing their best while aiming at excellence and staying alert to avoid mistakes, as well as encourage, inspire and help others around them to have a similar commitment to excellence, in the long haul always succeed in life and in their personal life find inner happiness, joy, flfillment, peace and freedom. Hardworking honest persons, to complete a task or job, plan their work in a thoughtful manner and prepare solutions for potential problems by themselves or if necessary with help from more knowledgeable persons, as well as they do not waste time or find excuses for why a task was not completed.

When people in doing and completing their work have honesty, integrity and follow other dictates of virtue such as truth, thoughtfulness, kindness, forgiveness etc. as described in the Vedas and in other Vedic scriptures as well as follow other positive ideals of the institution they work for, they may initially find it somewhat difficult to carry out their responsibilities especially if other coworkers ignore such ideals, shirk hard work, find short cuts or are dishonest. However, if one remembers that a job well done, like being virtuous, is a reward in itself because it gives the person an inner joy, fulfillment and peace. Also, goodness in a person, in the long haul, begets goodness in others. Moreover, such hardworking, caring and honest persons become dear to competent superiors at work and other honorable persons (called deva in this mantra) in the community and get rewarded in a variety of ways including personal satisfaction and happiness; promotion in job and greater salary; and greater respect and honor in the community.

Similarly, a person who cares for and respects mother earth (earth is also a deva) and utilizes the resources of nature properly in moderation while doing one's best to restore and maintain a healthy ecological balance and without being destructive finds that not only he/ she feels inner happiness and harmony but even the nature provides him/her with a better surrounding environmental ambiance. Therefore, O human beings! Use th resources of mother earth, and the physical world wisely and try to maintain a healthy ecological balance. Do not be destructive or exploit earth, nor should you pollute air, water or the soil/ground.

In contrast to honest and hardworking persons, there are others who are lazy, undisciplined, talkative, careless, inattentive, negligent, and/ or doze off at work. The latter group of persons. because of their bad habits often make serious mistakes both at work or in their personal lives and then suffer unhappiness, low self-esteem and misery. Their life is full of worries. anxiety, restlessness, fears, sadness and they feel trapped instead of freedom. Such persons life, because of unhappiness, lack of peace, doubt about future prospects becomes "a living hell" Moreover, they do not gain respect or recognition from honorable persons (deva) in the society. Even deva persons help those who make effort to help themselves and discipline those who are negligent.

One may be willing to excuse the mistakes made by a person who is not optimally competent due to ignorance, lack of education, indaequate training but is willing to learn, workhard and improve himself/herself. Howecer, a person who is educated and informed as well as knows what is truth vs.untruth, right vs. wrong, honest vs. dishonest, Just vs. unjust and despite all that knowledge still himself/herself continues to refrain from hard work and/or honesty then the person will sufferrthe ill consequences of his/ her actions. Many such persons have even personally experienced bad consequences of their own previous wrong habits and deeds as well as seen others suffer the ill results of the latter's bad deeds, yet they do not transform their own behaviour for the future, these persons will continue to suffer failure and more knocks in their lives. The rules of God's justice as well as those of all successful societies and businesses, reward hard working, honest and virtuous persns and punish lazy, dishonest, careless and negligent persons who shirk from their responsbilities to "have fun". While corruption in a society may allow dishonest, lazy or negligent persons to succeed temporarily, nevertheless in the long haul they will end up as personal and social failure as well lose respect from honorable persons in the society, and finally receive God's appropriate punishment.

Therefore, to make our life worthy and honorable, we should follow god's message as described in the Vedas and take a pledge in the presence of learned, honest and honorable elders of the society that hence forth we will follow truth, dharma and only do virtuous deeds in life. Also, we make a commitment to improve our personal physical, mental and spiritual well being. We will from now on modify our daily routine in life whereby we will rise early in the morning, exer-

प्रेरक प्रसंग

स्वामी ओमानन्द के संग –गोलों का गर्जन

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव बड़ा विवादास्पद बना दिया गया। अत्यन्त विषैला वातावरण था। सार्वदेशिक सभा के कुछ लोग इस कलह–कटुता का मुख्य कारण थे। धूरी पंजाब के श्री बाबू पुरूषोत्तम लालजी तथा अन्य कुछ सज्जनों ने हमें कहा कि यदि स्वामी सर्वानन्दजी महाराज (प्रधान यतिमण्डल) को सभा का प्रधान बना दिया जाए तो झगड़ा मिट जाए। स्वामीजी महाराज तो प्रतिनिधि भी नहीं बनते थे। प्रधान कैसे बनाया जाए? कौन उनको मनाए?

हमने यह बात स्वामी ओमानन्दजी, पण्डित जगदेवसिंहजी सिद्धान्ती और प्रो. शेरसिंह से कही। हरियाणा के लोग तैयार हो गये। अब प्रश्न था स्वामी सर्वानन्दजी को मनाने का। स्वामी ओमानन्दजी अपने साथ कपिलदेवजी शास्त्री, आचार्य सत्य प्रियजी हिसार को लेकर अबोहर पहुँच गये। हमें भी कहा कि हमारे साथ दीनानगर चलो, स्वामीजी को मनाएँ, उन्हें प्रतिनिधि बनाएँ। तीन दिसम्बर 1971 सायं को हम सब जीप पर चल पड़े। अबोहर से फाजिल्का तक भी न पहुँचे थे कि जनता को अबोहर की ओर भागते देखा, चीत्कार–सी सुनाई दे रही थी। उधर सीमा पर तोपों–टैंकों की दनादन आग बरसती स्पष्ट दिखाई दे रही थी। इन पंक्तियों के लेखक की स्थिति तो बड़ी विकट थी। लोग अबोहर को भागे जा रहे हैं। अबोहर भी सीमा पर है। परिवार में कोई भी पुरुष सदस्य नहीं। श्रीमतीजी तथा छोटी–छोटी बच्चियाँ।

हम चारों का आगे बढ़ना भी कौन–सी बुद्धिमत्ता थी। मार्ग में एक भगोड़े सैनिक को भी जान बचाने के लिए भागते देखा। हम स्वामी श्री ओमानन्दजी के साथ राष्ट्ररक्षा के लिए भारत के वीर जवानों को कड़ी शीत में पाकिस्तानी भेड़ियों से लोहा लेते देख रहे थे। वीरों की शूरता का गुणगान करते हुए, ईश्वर के भरोसे आगे बढ़ते गये। स्वामीजी की छत्रछाया में एक क्षण के लिए भी मृत्यु का भय हमारे पास न आया–

आगाज में कब दीवानों ने, बेकार गमे अंजाम किया। वाली बात थी। हम फीरोजपुर पहुँचे तो हमारी जीप के पास ही मिशन हस्पताल की दीवार के साथ पाकिस्तान का गोला फटा। कुछ मीटर की दूरी रही, अन्यथा हम सब वहीं ढेर हो जाते, हम तुरन्त आगे बढ़े। पठानकोट पहुँचे तो वहाँ विमानतल नष्ट करने के लिए शत्रु ने उसी रात भारी बम्ब–वर्षा की। दीनानगर में श्री स्वामी सर्वानन्दजी हमें देखकर दंग रह गये। दयानन्द मठ की दीवारें तोपों–टैंकों के गोलों की गर्जन से थर्रा रही थी। उस ऐतिहासिक युद्ध का आँखों देखा यह दृश्य हम कैसे भूल सकते हैं? जीवन सबको प्यारा है। मरना कौन चाहता है? परन्तु माता आर्यसमाज की रक्षा के लिए हम सबने स्वामी श्री ओमानन्दजी की प्रेरणा से अपने–आपको मृत्यु के जबड़ों में दे दिया। हमारा वहाँ जाना निष्फल गया। हाँ, यह घटना एक अमिट संस्कार छोड़ गई और हम अपनी यात्रा और पुरुषार्थ को निष्फल भी क्यों कहें? अच्छा हुआ कि स्वामी श्री सर्वानन्द जी चुनाव–तनाव में न उलझे। छद्मवेशी साधुओं का वास्तविक स्वरूप सबके सामने आ गया। ईश्वर ने शीघ्र ही सबकी भ्रान्ति का निवारण कर दिया। लक्ष्य–सिद्धि का अनुराग व्यक्ति को कितना निर्भीक बना सकता है और क्या–से–क्या करवा सकता है? यह घटना इसका एक ज्वलन्त प्रमाण है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आओ ! संस्कृत सीखें

समास प्रकरण – 37

गतांक से आगे....

द्वन्द्व समास : यह समास मुख्य रुप से दो प्रकार का होता है–

1. इतरेतरयोग द्वन्द्व– इसमें मध्य में और का अर्थ होता है व शब्दों की संख्या के अनुसार समस्त पद का वचन होता है अर्थात् दो हो तो द्विवचन, बहुत हो तो बहुवचन ।

उदाहरण– रामश्च कृष्णश्च= राम कृष्णौ। यहां ''राम और कृष्ण'' ऐसा ''और'' का अर्थ आ रहा है व दो शब्दों के मध्य समास हुआ है इसलिए समस्तपद में द्विवचन है।

2. सीता च रामश्च= सीतारामौ।
3. उमा च शंकरश्च= उमाशंकरौ।
4. पत्रं च पुष्पं च फलं च= पत्रपुष्प फलानि ।

2. समाहार द्वन्द्वः– इस समास में कई शब्दों के समुदाय का बोध होता है। समस्तपद में नपुंसक लिङ्ग एकवचन होता है।

उदाहरण– हस्तौ च पादौ च= हस्तपादम्। यहां दो हाथ व दो पैर के समुदाय को समास के द्वारा कहा जा रहा है। समस्तपद में नपुंसकलिङ्ग एकवचन हुआ ।

1. दधि च घृतं च= दधिघृतम् ।
2. गावश्च महिषाश्च= गोमहिषम् ।
3. व्रीहयश्च यवाश्च= व्रीहियवम् ।
4. शीतं च उष्णं च= शीतोष्णम् ।

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रथम पृष्ठ का शेष

पूर्वोत्तर भारत पहले ध्यान दिया होता ....

यह जिम्मेदारी उन संस्थाओं की है कि वे उन क्षेत्रों में ऐसे विद्यालय खोलें ताकि बच्चों की सोच में ही वह बात आ जाए कि उनका देश भारत है, उनकी संस्कृति वैदिक संस्कृति है। उनके महान पुरुषों में महर्षि दयानंद सरस्वती, श्रीराम और श्रीकृष्ण हैं।

हैरानी की बात होती है कि जब हम वहां जाते हैं तो हमें बच्चों से बात करने पर मालूम होता है कि उनको राम के बारे में मालूम ही नहीं। उनको कृष्ण के बारे में मालूम ही नहीं, उनको दयानंद के बारे में तो मालूम कहां से होगा! उनको यह भी मालूम नहीं कि यह देश उनका है, यह राष्ट्र उनका है, यह संस्कृति उनकी है।

आर्य समाज द्वारा स्थापित स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे जब वहां पर भारत माता की जय का नारा लगाते हैं, गायत्री मंत्र का पाठ करते, ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना का पाठ करते हैं और संध्या करते हैं और इसी के साथ जब वह गीत गाया जाता है 'ऋषि ऋण को चुकाना है आर्य राष्ट्र बनाना है' तब ऐसा लगने लगता है कि हमने यहां पर आकर के कुछ तो किया, कुछ तो राष्ट्र का ऋण चुकाया। आज वहां आवश्यकता इस बात की है कि उस क्षेत्र में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का क्रम भी तेजी से आरंभ किया जाए। मैंने जिन-जिन बातों को ऊपर लिखा निश्चित रुप से वह बातें आर्य समाज के अतिरिक्त वहां पूरे क्षेत्र में चलने वाले किसी भी विद्यालय में नहीं दिखेंगी। उदाहरण के लिए ऐसा एक भी विद्यालय नहीं है (नागालैंड आसाम के क्षेत्र में) जिसके बच्चे ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना का पाठ करते हों, जहां पर खुले मन से वंदे मातरम गीत का पाठ होता हो, देश भक्ति के गीत गाये जाते हों, जहां पर संध्या उपासना की जाती हो जहां पर ऋषि दयानन्द के गीतों को गाया जाता हो?

आखिर यह भी हो रहा है तो केवल तब हो रहा है जब विद्यालय हमारे हैं, शिक्षक हमारे हैं, संस्कृति हमारी, धरती हमारी है, विचार हमारे, यदि हम यह सोचें कि हम दूसरे के विद्यालय में जा करके यह विचार उनके बच्चों में डाल पाएंगे तो हमारी यह भूल होगी।

मैं यह विचार करता हूं कि यदि सौ साल पहले से ही हमारे विद्यालय वहां पर खुल रहे होते तो आज जो उस क्षेत्र की परिस्थिति वर्तमान में दिख रही है वह बिल्कुल भी न बनती। मुझे विश्वास है यदि हम अपने कार्यो को बहुत अच्छी प्रकार से करने में सफल हो सके और लक्ष्य को पूरा कर सके तो आने वाला समय निश्चित रुप से वहां एक बदलाव लेकर के आएगा और यह बदलाव आर्य समाज के कार्यो को अधिक-से-अधिक क्षेत्रों में बढ़ाने के लिए कारगर सिद्ध होगा।

- विनय आर्य, महामन्त्री

आर्य समाज गांधीधाम का 64वां वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज गांधीधाम अपना 64वां वार्षिक अधिवेशन 12 से 14 जनवरी 2018 को महर्षि दयानंद मार्ग झण्डा चौके पास गांधीधाम कच्छ गुजरात में आयोजित कर रहा है। प्रत्येक कार्यक्रम के पूर्व अध्यक्ष, संचालक, वक्ता व अतिथियों के नाम घोषित किये जाएंगे। सम्मेलन के विषय कार्यक्रम से 2 दिन पूर्व निधारित किये जाएंगे। - *गुरुदत्त शर्मा महामंत्री*

यजुर्वेद एवं सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज गंजबासौदा के तत्त्वावधान में वेद कथा, यजुर्वेद एवं सामवेद पारायण महायज्ञ 11 से 17 जनवरी 2018 के बीच मानस भवन मेला ग्राउण्ड, गंजबासौदा (म.प्र.) में आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य श्री हरीशचन्द्र शास्त्री होगें। वेदपाठ सुश्री क्षमा आर्या (राजस्थान) होंगी। वैदिक प्रवक्ता श्री सुरेश शास्त्री व भजन सर्वश्री काशीराम अनल, सुरेश आर्य, विनोद आर्य जी होंगे।- *देवेंद्र तोमर, मंत्री*

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल वैदिक विद्यापीठ कस्बा तितरों, जनपद सहारनपुर में कक्षा 6 से प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक विद्यार्थी सम्पर्क करें

- महर्षि पतंजलि अन्तर्राष्ट्रीय योग विद्यापीठ, गंगनहर तट, हरिद्वार-भोपा कावड़ मार्ग पत्रालय-कम्हेड़ा तुगलपुर जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

मो. 8993934033, 9084647035

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज कटनी (म.प्र.)

प्रधान - श्री अश्विनी सहगल
मंत्री - श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति
कोषाध्यक्ष - श्री संदीप मनोचा

खुशखबरी! !! पहले आओ पहले पाओ!! खुशखबरी!!

नये साल 2018 के उपलक्ष्य में प्रेम जन कल्याण सेवा संस्थान (पंजी.) द्वारा

विभिन्न प्रशिक्षण कोर्स

जैसे- अगरबत्ती बनाना, धूप बत्ती बनाना, हवन सामग्री बनाना, मोमब त्ती बनाना, सर्फ, साबुन, ईजीवाश, फिनाइल, ग्लास क्लीनर व सौर ऊर्जा पैनल बनाना।

हारमोनियम, कैशियो, ढोलक, संगीत आदि का कोर्स कराया जाता है। सिलाई, कढ़ाई, बुनाई और बड़ी, पापड़ मसाला आदि का भी कोर्स कराया जाता है। प्रेम दर्शन धूप ताजा फूला से तैयार किया जाता है। प्रशिक्षण के लिए सम्पर्क करें -

- ए 1/29 गली नं-1 निकट खजूरी चौक, अग्रवाल स्वीट के पास, मेन वजीराबाद रोड, भजनपुरा दिल्ली-110053 मो. 9990657527, 8178687839, 8377841776

Advt. **Email: premhankalyan@gmail.com, wwww.premjankalyansst.org**

88वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर दिल्ली का 88वां वार्षिकोत्सव दिनांक 22 से 24 दिसम्बर को दिल्ली सभा द्वारा गठित तदर्थ समिति के संरक्षक श्री अनिल गोयल, प्रधान श्री मनबीर सिंह राणा तथा मंत्री श्री संजीव बजाज के सानिध्य में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के वेद प्रवचन तथा श्री नरदेव आर्य (भरतपुर) के भजनोपदेश हुए। कार्यक्रम संयोजक श्री योगेश कुमार आर्य व अश्वनी आर्य तथा अजय अग्रवाल थे। - *मन्त्री*

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के तत्त्वावधान में 17 दिसम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ पं. बालकृष्ण शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। गाजियाबाद से पधारे आचार्य चन्द्र पाल शिक्षा शास्त्री ने कहा कि 'जीव हर समय सुख की तलाश में रहता है। सुख का आधार धर्म है लेकिन धर्म का आधार वेद एवं ईश्वर होने के कारण उसी से मित्रता कर उसकी आज्ञानुसार कर्म व व्यवहार करना चाहिए तभी हम आनन्द को प्राप्त कर सकेंगे।' पं. प्रताप वैदिक सहारनपुर ने महर्षि दयानन्द जी के कार्यो पर प्रकाश डाला। -*विजय सरीन, प्रधान*

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** आरम्भ किया गया था। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बनें। यह स्तम्भ पुनः आरम्भ किया जा रहा है। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha @ yahoo. com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक'
आर्य सन्देश साप्ताहिक
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं हेतु सूचना

आर्य स्वास्थ्य परिषद् का गठन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं तथा आर्यजनों की सूचनार्थ है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज की एक सेवा ईकाई आर्य स्वास्थ्य परिषद् का निर्माण करना चाहती है। इस हेतु दिल्ली की आर्यसमाजों में संचालित औषधालयों (डिस्पेंसरी)/चिकित्सीय सेवाओं की जानकारी अपेक्षित है, जिससे उनके समय, सेवा, अनुभवों का लाभ प्राप्त करके जन-साधारण को उपलब्ध कराया जा सके। अतः उन सभी आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं जिनमें किसी भी प्रकार की कोई भी स्वास्थ्य सेवा एलौपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा आदि कोई भी पद्धति संचालित हैं। कृपया वे इस व्यवस्था से सम्बन्धित अधिकारियों/ व्यक्तियों के नाम, पदनाम, पते, फोन नं. आदि औषधालय/चिकित्सालय/ डिस्पैंसरी के संक्षिप्त विवरण के साथ यथाशीघ्र 'महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते अथवा सभा की ईमेल aryasabha@yahoo.com पर भिजवाने की कृपा करें ताकि सभा आप सभी के सहयोग से इस दिशा में आगामी कार्यवाही हेतु आगे बढ़ सके। अधिक जानकारी के लिए कार्यालयाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी 9540040322/9717174441 से सम्पर्क करें।

-विनय आर्य, महामन्त्री

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

Arya Bride

Suitable match for Arya Punjabi Handsum , fair boy, never married 5'10", DOB 7-7-75, 23:45 hrs. Delhi. B.Com (D.U), Professional in BMS,Own settled Electronic business (a Pvt Ltd Comp.) Income 6 Lacs p.a. Own House. Seeks culture & respectable family. No dowry & Mail girls profile and photo at **deep5914@gmail.com**. Tel - 9810414037. Advt.

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 जनवरी, 2018 से रविवार 7 जनवरी, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2018–19–2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 04/05 जनवरी, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 03 जनवरी, 2018

विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी (छूट) हेतु अधिकाधिक दान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. 912010055423646 एक्सिस बैक करोल बाग
IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। सत्यार्थ प्रकाश कम मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दान देने वाले आर्य संस्थानों, आर्यसमाजों एवं सहयोगी आर्य महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

100 सत्यार्थ प्रकाश 10–10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/– रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। *– महामन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

41 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। – महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

कार्यकर्ता पारिवारिक परिचय एवं पिकनिक

26 जनवरी, 2018 (शुक्रवार)
स्थान : कृष्णा फार्म (पहाड़ी के ऊपर)
अंसल गोल्डन हाइट्स, सोहना (गुड़गांव)

प्रात:राश, दोपहर का भोजन, सायंकालीन जलपान एवं खेलकूद प्रतियोगिताएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों से निवेदन है कि कार्यक्रम में पहुंचने हेतु अपने नाम सभा उप प्रधान एवं कार्यक्रम संयोजक श्री ओम प्रकाश आर्य जी (9911155285) के सम्पर्क करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001,
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह